मूल्य ₹ 20.00 (भारत में)
रु. 30.00 (नेपाल में)
जुलाई-अगस्त 2016

समकालीन

तीसरी दुनिया

महाशक्तियों के प्रभुत्ववाद के खिलाफ तीसरी दुनिया के प्रतिरोध का मुखपत्र

महाश्वेता देवी का निधन

एक थी हिड़मे और एक था संविधान...

...बस्तर में

संघ की सरकार के दो साल और बढ़ता सामाजिक उबाल

कश्मीर घाटी से सीधी बात

गोरक्षा का आतंक

नेपालः कौन हारा, कौन जीता

पंजाब में जमीन पर हक की लड़ाई में दलित

अब्बास किआरुस्तमी का सिनेमा

बेजवाडा विल्सन को रमन मैगसायसाय पुरस्कार

भाषा सिंह

पिछले 32-33 सालों से देश भर में मैला प्रथा के खिलाफ जुझारू अभियान चला रहे सफाई कर्मचारी आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक बेजवाडा विल्सन को 2016 का रमन मैगसायसाय पुरस्कार दिया गया है। कर्नाटक के कोलार गोल्ड माइंस में एक दलित स्कैवेंजर परिवार में 1966 में जन्मे बेजवाडा विल्सन अंबेडकरवादी विचारधारा के हैं। साथ ही वह प्रगतिशील, वाम विचारधारा से भी गहरे रूप से प्रभावित रहे हैं और तमाम लोकतांत्रिक आंदोलनों के साथ चलने में विश्वास करते हैं।

बेजवाडा विल्सन

विल्सन का मानना है कि एशिया का नोबल कहे जाने वाले इस पुरस्कार का श्रेय, 'उन हजारों मैला ढोने वाली महिलाओं और पुरुषों को जाता है, जिन्होंने इंसानी गरिमा के लिए इंसानी मल को उठाना बंद किया। बिना किसी सरकारी पुनर्वास के मल उठाने वाली टोकरियों को जलाया और मैले के नरक से बाहर आई। उनके हौसले के बिना सफाई कर्मचारी आंदोलन को देश के 23 राज्यों तक पहुंचाना और इस घिनौनी जातिप्रथा के खिलाफ अभियान चलाना असंभव था।' आज देश भर में 7000 के करीब वॉलेंटियर सफाई कर्मचारी आंदोलन के हैं, जो अधिकांशतः, इसी समुदाय से हैं। यहां जब हम इस समुदाय की बात करते हैं तो उसका अर्थ होता है, मैला ढोने के काम में लगने वाले समुदाय से। ये अलग-अलग जातियों और धर्मों के लोग हो सकते हैं, लेकिन सभी इंसानी मल को हाथ से उठाने, उसे साफ करने के लिए मजबूर किए जाते हैं। इस कुप्रथा में बड़ी संख्या में महिलाएं हैं। लिहाजा सफाई कर्मचारी आंदोलन में भी सोची-समझी रणनीति के तहत समुदाय की महिलाओं को तरजीह दी जाती है। कर्नाटक के कोलार जिले से शुरू हुए आंदोलन ने जिस तरह से राष्ट्रीय पहुंच और जगह बनाई है, उसमें इस आंदोलन को मिले व्यापक जनाधार की भी अहम भूमिका रही। वर्ष 2015, 10 दिसंबर से लेकर 13 अप्रैल, 2016 तक एक राष्ट्रव्यापी भीम बस यात्रा निकाली, जिसका नारा था, सीवर-सेप्टिक टैंक में हत्याएं बंद करो। साथ ही मैला प्रथा के खात्मे की अपनी लड़ाई को भी तेज किया।

बेजवाडा विल्सन और सफाई कर्मचारी आंदोलन की मुहिम बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की जातिप्रथा के उन्मूलन से जुड़ी हुई है। वह पूरे सेनिटेशन या साफ-सफाई के काम को जाति की जंजीरों से मुक्त कर आधुनिक और गरिमामय बनाने के हिमायती हैं ताकि दलित ही नहीं किसी भी इंसान को सीवर-सेप्टिक टैंक में जान देने के लिए मजबूर न होना पड़े। बेजवाडा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत और स्मार्ट सिटी के तीखे आलोचकों में से एक हैं, क्योंकि उनका मानना है कि ये दलित विरोधी और जाति तथा वर्ग भेद बढ़ाने वाले हैं। बिना सेनिटेशन को आधुनिक किए, बिना सीवर लाइनों को मानव हस्तक्षेप से मुक्त किए, टायलेट बनाना, सफाई कर्मचारियों के लिए मौत के चैंबर्स बनाने जैसे है। ऐसा इसलिए क्योंकि बिना सुरक्षित सीवर लाइन के जो टॉयलेट बनते हैं, वे या तो सेप्टिक टैंक से जुड़े होते हैं या फिर सीधे नालियों में उनका मल फेंका जाता है। जो टॉयलेट सीवर से जुड़े हैं, वहां भी सीवर साफ करने के लिए इंसानों को सीवर लाइन में उतरना पड़ता है और जहरीली गैस का शिकार हो जान गंवानी पड़ती है। विल्सन का मानना है कि शुष्क शौचालयों को तोड़ने और हाथ से मैला उठाने की प्रथा समाप्त करना केंद्र सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए, लेकिन मोदी सरकार यह करने के बजाय तमाम जुमलेबाजी कर रही है।

स्वच्छ भारत के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च किए जा रहे हैं, जबकि मैला प्रथा से बाहर आने पर मिलने वाले पुनर्वास को कम कर रही है। ऐसे में इंसाफ मिलना बहुत मुश्किल है। सरकार में राजनीतिक इच्छाशक्ति बेहद कम है और वह जातिप्रथा को कायम रखना चाहती है।

तमाम दलित आंदोलनों के बीच सफाई कर्मचारी आंदोलन और बेजवाडा विल्सन की खासियत यह है कि इसके समर्थन में गैर-दलित समुदाय का बहुत बड़ा हिस्सा खड़ा दिखाई देता है। नेतृत्व की कमान बहुत मजबूती से सफाई कर्मचारी समुदाय के पास रहती है और इसमें कोई ढिलाई नहीं दिखाई देती है, लेकिन भोजन के अधिकार आंदोलन से लेकर आधार कार्ड के खिलाफ चल रहे अभियान से लेकर किसानों की आत्महत्याओं के खिलाफ उठ रहे कदम, कश्मीर में नाइंसाफी पर बोलने वाले उग्र स्वर, छात्रों के अधिकार आंदोलन, महिला मुक्ति के साथी तक सफाई कर्मचारी आंदोलन के साथ खड़े नजर आते हैं।

समकालीन
तीसरी दुनिया
जुलाई-अगस्त 2016

संपादक मंडल
मंगलेश डबराल
राम शिरोमणि शुक्ल
रंजीत वर्मा
अभिषेक श्रीवास्तव

संपादक
आनन्द स्वरूप वर्मा

विशेष कला सलाहकार
बिभास दास

नेपाल प्रतिनिधि
नरेश ज्ञवाली

संपादकीय संपर्क:
क्यू-63, सेक्टर-12
नोएडा (गौतम बुद्ध नगर) पिन: 201301
फोन: 0120-4356504/9810720714
ई मेल : teesaridunia@yahoo.com
vermada@hotmail.com
वेब साइट: www.teesariduniya.com

एक प्रति: 20 रुपये (भारत में)
30 रुपये (नेपाल में)
वार्षिक: 200 रुपये
आजीवन: 3000 रुपये

आनंद स्वरूप वर्मा द्वारा क्यू-63, सेक्टर-12, नोएडा से प्रकाशित तथा सागर प्रिंट ओ पैक, बी-46, सेक्टर-5, नोएडा से मुद्रित।
पंजीकृत कार्यालय: 14, सुविधा बाजार, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-110 023

इस अंक में

आवरण कथा
एक थी हिड़मे... **अनंत राय** 4
दो साल और बढ़ता सामाजिक उबाल **अभिषेक श्रीवास्तव** 14

नेपाल
कौन हारा, कौन जीता **कुंदन अर्याल** 20
उज्जन कुमार श्रेष्ठ हत्याकांड **नरेश ज्ञवाली** 58

देशकाल
कश्मीर के हालात बेकाबू हो रहे हैं **प्रेम शंकर झा** 22
कश्मीर घाटी से सीधी बात **निदा नवाज़** 24

सामयिकी
गोरक्षा का आतंक **न्यू सोशलिस्ट इनिशिएटिव** 28

स्मृति शेष
महाश्वेता देवी की याद **मंगलेश डबराल** 11
महाश्वेता के साथ **गोरख पांडेय, उर्मिलेश, चमन लाल** की बातचीत 12
नीलाभ 'अश्क' का जाना **अभिषेक श्रीवास्तव** 56

विदेश
सीरिया के राष्ट्रपति असद से बातचीत 32

संघर्ष गाथा
साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के योद्धा पैट्रिस लुमुम्बा 36
लुमुम्बा की हत्या की गोपनीय फाइलें **स्टीफेन वेसमैन** 40

कविता
अफ़्रीका के सीने में एक सुबह **पैट्रिस लुमुम्बा** 38
एक कविता **नित्यानंद गायेन** 7

मजदूर मोर्चा
फ्रांस के कामगारों का विद्रोह **पीयूष पंत** 42

आंदोलन
पंजाब के दलित किसानों का संघर्ष **राजेश कुमार** 44

रिपोर्ट
जैतापुर के किसानों की मुसीबत **अभिषेक रंजन सिंह** 51

विश्व सिनेमा
फिल्मकार अब्बास किआरुस्तमी **अजय कुमार** 62

गोष्ठी
लातिन अमेरिकी जनता का संघर्ष **विनीत तिवारी** 69

पुस्तक समीक्षा
रवींद्र कुमार दास का काव्य संकलन **शिवमंगल सिद्धांतकर** 71

एक थी हिड़मे...और एक था संविधान जो बस्तर में कहीं गुम हो गया

अनंत राय

हिड़मे की कहानी छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले के गोमपाड़ गांव से ताल्लुक रखती है। 21 साल की आदिवासी लड़की मड़कम हिड़मे यहां अपने मायके में रह रही थी। उसकी कुछ ही दिनों पहले शादी हुई थी। उस दिन यानी 13 जून को हिड़मे की तबीयत ठीक नहीं थी। रात से ही उसे हल्का बुखार था उसकी मां ने उसे आराम करने की सलाह दी। लेकिन वह घर के कामकाज में हाथ बंटाने में लगी रही। तभी घर के बाहर अचानक कुछ कदमों के तेजी से चलने की आहट आयी। वह उस समय आंगन के एक कोने में बैठी धान कूट रही थी। उसके हाथ रुक गए। तभी पुलिस के कुछ जवान धड़धड़ाते हुए अंदर आ धमके और उसे पकड़ कर खींचने लगे। हिड़मे की चीख सुनकर उसकी मां लक्ष्मी दौड़ी हुई आयी और उसने पुलिस वालों को रोकना चाहा। एक पुलिस वाले ने मां को धक्का दिया और वह गिर गयी। अन्य पुलिसवाले उसे बंदूक की बट और जूतों से मारने में लग गए। लक्ष्मी बेवश चीखती पड़ी रही और पुलिसकर्मी हिड़मे को उठाकर अपने साथ लेते गए। यह माओवादियों से निपटने के लिए बनायी गयी स्पेशल टास्क फोर्स थी। टास्क फोर्स के जांबाजों की यह टीम हिड़मे को लेकर पास के जंगल में गयी जहां गांववालों के अनुसार उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। जिस जंगल में हिड़मे को लेकर पुलिस वाले गए थे उसी जंगल में कुछ गांव वाले भी शिकार की तलाश में घूम रहे थे। हिड़मे की चीख सुनकर वे अपने तीर कमान के साथ मदद के लिए पहुंचे लेकिन पुलिस वालों ने अपनी रायफलें तानकर भगा दिया। गांव वालों ने जंगल में झाड़ियों के पास हिड़मे की टूटी चूड़ियां देखी थीं। सारा दिन बीत गया। लक्ष्मी को हिड़मे के बारे में कुछ भी पता नहीं चला। वह रात भर बेचैन रही।

अगले दिन 14 जून को ग्राम सचिव के पास किसी का फोन आया जिसमें कहा गया था कि मड़कम हिड़मे की लाश चाहिए तों कोंटा थाना आकर ले जाओ। सचिव ने हिड़मे के परिवार को जानकारी दी और जब उसकी मां लक्ष्मी गांव वालों के साथ थाने पर पहुंची तो वहां का नजारा देखकर हैरान रह गयी। उसने देखा कि हिड़मे की लाश एक पॉलीथिन में लिपटी सड़क पर पड़ी है। पुलिस वालों ने बताया कि ये माओवादी है और इसका एनकाउंटर कर दिया गया है।

अगले दिन 15 जून को गांव वालों के कहने पर परिवारजनों ने हिड़मे को दफना दिया।

छत्तीसगढ़ पुलिस का कहना है कि हिड़मे माओवादी कार्यकर्ता थी और माओवादियों की किस्ताराम प्लाटून नंबर-8 की मेंबर थी।

मड़कम हिड़मे को पुलिस ने मारा, वर्दी पहनाई, हाथ में एक राइफल पकड़ाई और माओवादी घोषित कर दिया